पेरिस
७ अप्रील, २००६

संदेश संख्या – १६५

संगीत

संगीत (माधुर्य)
समन्वय (योग)
समझदारी (समझदारी की ऊर्जा)
समर्पण ('मैं' से मुक्ति)
शून्यता (रिक्तता, बॉसुरी का खोखलापन, पवित्रता, पूर्णता)
स्थितप्रज्ञ – समाधि (समता, पूर्ण एवं शर्तरहित निर्विकल्पता, तटस्थ सजगता, सर्वव्यापी चैतन्य)

यह संदेश शिवेन्दु की ऊर्जा के इंग्लैण्ड आगमन की पूर्व संध्या पर इंग्लैण्ड के ही एक भक्त (जो विभक्त नहीं है) द्वारा लिखा गया है ।

यह जीवन सर्वव्यापी गीत है जिसे सर्वव्यापी चैतन्य निरन्तर गाये जा रहा है । यहाँ एक अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत है जिसमें बताया गया है कि कैसे संगीत जीवन की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति का माध्यम हो सकता है । अपनी पीढ़ी के सर्वाधिक सफलतम संगीतकारों में से एक ने बताया कि वह किसी का भी नकल नहीं करता बल्कि प्रकृति ही उसका एकमात्र उत्प्रेरक है । उसने यह भी बताया कि उसने संगीत लिखना–पढ़ना कभी नहीं सीखा क्योंकि वह उसे समझ में नहीं आता । उसके लिए तो यह स्वतःस्फूर्त है।

यह शरीर (भक्त–क्रियावान) यह देख पाता है कि नकल मानवीय है, मन है जबकि सृजन निर्मन है, दिव्यता है, जीवन है । जीवन सृजनात्मकता है तो केवल अपने लिए और इसीलिए वह मानव मन के प्रयत्नों से सर्वथा पृथक तथा स्वतंत्र है । जो भी शरीर जीवन की धुन के प्रति खाली है, मन के प्रयत्नों से रहित है, वह उसकी अभिव्यक्ति का एक माध्यम बन जाता है ।

तब शरीर के माध्यम से संगीत की धारा बहने लगती है । संगीत की यह मुक्त अभिव्यक्ति असीमता में होती है क्योंकि सीमाबद्धता जीवन के प्रतिकूल है। तब सफलता निश्चित होती है क्योकि ऐसी कलात्मक अभिव्यक्ति की यह प्रामाणिकता लोगों के हृदय को छू लेती है ।

यह तभी होता है जब शरीर मुक्त हो अर्थात् जब सृजन–प्रक्रिया को प्रभावित करने का मन का कोई प्रयास नहीं हो । ऐसे में, बताने के लिए या वर्णन हेतु कुछ भी नहीं होता क्योंकि यह सब तो स्वतः स्फूर्त रूप से घटित हो रहा होता है । प्रयत्नरहित और सर्वाधिक विस्मयकारी सृजनात्मकता! अतः जब जीवन रूपी नदी को मन के बाँध से बाँधे बिना निर्बाध रूप से प्रवाहित होने दिया जाता है, तब सर्वत्र सौन्दर्य एवं विस्मय प्रकट होता है, चाहे वह संगीत के माध्यम से हो या कला या नृत्य के माध्यम से । यह पूरी प्रक्रिया स्वतःमुखरित होती है तथा प्रत्येक अभिव्यक्ति अद्वितीय होती है । यह सर्वव्यापक एवं अवैयक्तिक चैतन्य जिस तरह स्वयं को अभिव्यक्त करता है, वह अविच्छिन्न रूप से विलक्षण है ।

सचमुच, क्या विस्मय है? इस परम शून्यता से, इस परम एवं अथाह शान्ति से सभी प्रकार की आश्चर्यजनक ध्वनियाँ और संगीत उत्पन्न होते हैं । किन्तु यहाँ सुनने के लिए कौन है?

।। जय संगीत ।।
।। जय भक्त ।।